P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-10* June- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भीष्म साहनी : कुन्तो में स्त्री विमर्श

रत्ना कुशवाहा
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
एच.एस.ए.पी.जी. कालेज
रजीपुर, कमालगंज,
फर्रूखाबाद

सारांश

स्त्री को बाल्यकाल में ही यह शिक्षा दी जाती है कि बिना पुरूष के सहयोग के वह अधूरी है इस प्रकार भारतीय समाज के हर वर्ग के परिवारों में स्त्री को जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त पुरूष पर निर्भर रहना पड़ता है । बाल्यकाल में पिता, भाई विवाह होने के बाद पति तथा वृद्धावस्था में यदि पति जीवित न रहे तो पुत्र पर निर्भर रहना पड़ता है । उसकी स्वयं की कोई इच्छा नहीं कोई चाहत नही । वह तो अपने या अपने बच्चों के लिये स्वयं कोई निर्णय भी नहीं ले सकती । परिवार का सर्वेसर्वा पुरूष ही होता है ।

मुख्य शब्द : आत्ममंथन, आकर्षण, अनुसरण, अर्द्धशिक्षित, मानप्रतिष्ठा, दुष्प्रवत्ति, औपचारिक, सवेंदनहीन, बुद्धिजीवी, तिकड़म और आत्मरक्षा।

प्रस्तावना

जैसे जीवन में स्त्री का महत्व हमेशा था और हमेशा रहेगा उसी प्रकार साहित्य में भी स्त्री के बिना न काम चला था और न चला है और न चलेगा पुरूष की उपस्थिति जितनी अनिवार्य है उतनी ही स्त्री की भी । यह तथ्य है और कोशिशों के बावजूद भी इसे झुठलाया नहीं जा सकता ।

मुख्य प्रश्न है कि आखिर पुरूष में वे कौन से सुर्खाब के पर लगे हैं जिनके कारण स्त्री वही हो जैसा पुरूष चाहता है स्त्री विमर्श भी वहीं से शुरू होता है स्त्री के अपने होने यादि उसकी अस्मिता की पहचान और उसकी अर्जन के दायरे उसकी तकलीफें उसके सपने, उसका चिंतन, उसका विद्रोह, उसका अधिकार, उसका आत्मविश्वास, अपने बूते पर खड़े होने की ताकत उसके प्रतिरोध ही नहीं अपितु उसके प्रतिशोध, उसकी हारजीत और उसकी उपलब्धियां आदि सब आती हैं और साहित्य में स्त्री विमर्श यही है ।

स्त्री अब हर कार्य करने में सक्षम हो गयी है वह पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है स्त्री पर अत्याचार करना पुरूष की भारी भूल होगी अब वह खुद अपनी मर्जी का चुनाव कर सकती है क्योंकि अब वह शिक्षित है । अपने पैरों पर खड़ी हो चुकी है जैसे जैसे समाज में स्त्री की दयनीय जीवन में बदलाव आया है और वह अबला से सबला बनने की ओर अग्रसर हुयी वैसे वैसे वह अपने अधिकारों के प्रति सजग और सचेत भी हुयी है परिणामस्वरूप पुरूष प्रधान समाज के बंधनों के खिलाफ उसने विद्रोह किया है ।

इस उपन्यास का प्रकाशन सन् 1993 में हुआ था इस उपन्यास में जयदेव कुन्तो, गिरीश और सुषमा, धनराज तथा थुलथुल के माध्यम से लेखक ने पुरूष वर्चस्व एवं स्वेच्छाचारिता के द्वारा स्त्री की आकांक्षाओं के दमन और उनके मानसिक अवसादों का वर्णन किया हे । लेखक ने यह प्रतिपादित किया है कि प्राचीन आदर्शवादी धाराणायें और रूढ़ियां पुरूषों के स्त्री पर अधिकार जमाने, उन्हें दबायें रखने की बुनियाद पर आधारित हे । इन्हें बौद्धिक रूप से सामाजिक और पारिवारिक सुख शांति में बाधक मानते हुये घर के मुखिया मर्यादा के नाम पर सुरक्षित रखना चाहते हैं ।

"कुन्तों" उपन्यास में इस तथ्य को उद्घाटित किया गया है कि भारतीय समाज में वैवाहिक रिश्ते, भाई, दादा, चाचा आदि पुरूषों द्वारा तय किये जाते हैं । वर–वधु को इस मामले में अपनी पसंद चुनने का कोई हक नही है । इस विसंगति के परिणाम स्वरूप पति पत्नी के रिश्ते यांत्रिक ढंग से ही निभाये जाते हैं । अतः उनमें प्रेम समर्पण भाव की कमी पायी जाती है । पत्नी को उसका पति कुछ समय तो अपनी काम क्रीड़ा का साधन बनाने के लिये प्रेम दर्शाता है उपन्यास का नायक जयदेव की आशक्ति बचपच से मौसेरी बहन सुषमा के साथ थी । सुषमा भी जयदेव के व्यक्तित्व से प्रभावित थी किन्तु, सामाजिक रीति रिवाजों की मर्यादा के कारण उसका विवाह सुषमा से नहीं हो सकता था।

प्रोफेसर साहब अपनी बहिन कुन्तो का रिश्ता जयदेव के साथ कराने के इच्छुक थे इसलिये वे जयदेव के सुषमा के प्रति प्रेम को हल्के में लेते हैं और उसके चित्त को सुषमा की ओर हटाने के तर्क भी देते हैं और कुन्तो का

सुन्दरता की दृष्टि से भी सुषमा से श्रेष्ठ बतलाते हैं उनकी आत्मग्लानि को इन शब्दों में अभिव्यक्ति मिलती है।

"क्या मैं एक तरूण कोमल अंकुर को मसल डालने की कोशिश तो नहीं कर रहा हूँ । एक निश्छल प्रेम की भ्रूण हत्या तो नहीं कर रहा हूँ"।[1] आत्ममंथन में प्रोफेसर साहब की अपनी बहन के रिश्ते की चिंता की विजय होती और वे अपने मन के न्यायधीश को यह कहकर अनुकूल कर लेते हैं कि "आकर्षण का होना स्वाभाविक है परन्तु आकर्षण पर अपना बस भी होना चाहिए किसी की पत्नी सुन्दर है ,मैं उसके सौन्दर्य की ओर खिंचा जा रहा हूं पर मैं बेलगाम होकर उसका पीछा नहीं कर सकता।मनुष्य के ऊपर उसका विवेक होता है, होना चाहिये।मैं वृतियों को दबाने का समर्थन नहीं करता, पर उसका बेटोक अनुसरण के खिलाफ हूँ।"[2]

जयदेव की बहन विद्या जब कक्षा पांचवी में पढ़ती थी जब उसे स्कूल से उठा लिया गया था और वह ही दिन तक विसूरती रही थी। फिर शादी हो गयी। पहली वार उसने अपने पति को विवाह के बाद देखा था।अपनी जवानी तो जैसे बीती,बीती गयी पर मौसेरी बहिन के प्रति उसके मन में बड़ी चाह थी कि वह पढ़े,खूब पढ़े।परन्तु मौसी के परिवार वालों ने लड़के का परिचय प्राप्त किये विना सुषमा की सगाई इसलिये करनी चाही क्यों कि जैसे भी हो घर का भार (लड़की का भार) हल्का करना चाहते थे। इसीलिये जयदेव को लगता है सुषमा के प्रति अन्याय हो रहा है। तो वह इसका विरोध करता है।

जयदेव–सहदेव के प्रयासों से जब सगाई टूट जाती है तो सभी अपना गुस्सा जयदेव–सहदेव पर करते हैं।क्यों कि वह सामाजिक धारणा से डरे हुये रहते हैं कि लड़की की सगाई टूटने पर समाज बिरादरी के लोग तरह–तरह लांछन लगाते है जिससे दोबारा सगाई होना मुश्किल हो जाता है और कुंवारी लड़की का बोझ जीवन भर ढोना पड़ता है। जयदेव की मां जयदेव–सहदेव को सगाई छुड़वाने का अपराधी सिध्द करती हुयी तर्क देती है कि मेरी बहिन के चार–चार बेटियां है।उन्हें एक–एक को ठिकाने लगाना है और अभी तक केवल एक ब्याह हो पाया है और वह बड़ी मुश्किल से इन पक्तियों मे समाज में प्रचलित ठिकाना लगाना शब्द का प्रयोग लड़कियों की इस अपमानजनक स्थिति को स्पष्ट करता है।

भारतीय समाज में लड़कियों को बचपन से ही पराया मानकर उन्हें खेलने,कूदने,हंसने,बोलने, पढ़ने लिखने से वंचित रखने की प्रवृत्ति प्रचलित है। और घर के लोग एनकेन प्रकारेण उनकी मर्जी जाने बगैर उनका विवाह करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान बैठते हैं। जयदेव के घर तो बहिनों को नंगे सिर छज्जे पर आने की मनाही थी इसलिये प्रोफेसर के घर पर भइया के आवाज लगाने पर बहिन का झांककर छज्जे पर जाना ही जयदेव को आश्चर्यजनक लगा।

लेखक ने 'कुन्तो' उपन्यास में पुरूष प्रधान संस्कृति के इस विसंगति पूर्ण रिवाज पर भी प्रकाश डाला है परिवार में लड़कियों को पढ़ा लिखाकर योग्यता हासिल करने एवं रोजगार के वैसे अवसर देने का रिवाज नहीं है। जैसा कि पुरूषों को स्त्रियों का कार्य क्षेत्र चौका – चूल्हा, रसोई, बर्तन, कपड़े धोना और कपड़ो की मरम्मत करना आदि तक सीमित रखने की प्रथा है। जयदेव की मौसी के घरेलू वातावरण में स्त्रियों की दशा, विद्या दीदी के घरेलू कामकाज तथा अन्य स्त्री पात्रों के माध्यम से लेखक ने स्त्रियों के जीवन की इन विडंवनायों के चित्र प्रस्तुत किये हैं। भीष्म साहनी के इस उपन्यास के अनेक प्रसंगो मे भारतीय नारी के उस दुःख दर्द को भी वाणी दी है जिसमे उसे ससुर,पति या बच्चो तक से अपने मायके के उपहास की पीड़ा सहन करनी पड़ती है।जयदेव की मौसी के माध्यम से इस स्थिति का प्रकाशन किया गया है कभी–कभी साल में दो तीन वार मौसी का धैर्य चुक जाता था और अक्सर ऐसा पति की फटकार से होता था कोई बच्चा अनजाने ही कोई ऐसी बात कह देता जो दिल को छलनी कर जाती । माँ, तुम तो गरीबो के घर से आयीं थी ना"–एक उसके बड़े बेटे ने माँ सीधे साधे कपड़ो पर टिप्पड़ी करते हुए कहा था। या फिर बाबू जी कह देते ,"मेरी समझ में नहीं आता तुम दिनभर करती क्या रहती हो।एक खाना ही तो बनाती हो।अगर वह भी तुम पर बोझ है तो छोड़ दो , मैं कोई और प्रबंध कर लूंगा।

लेखक ने भारतीय परिवारों की इस पुरूष मनोवृत्ति से हमारा साक्षात्कार कराया है कि जब कभी परिवार में सकंट पूर्ण ,अशुभ कोई घटना घटित होती है तो परिवार के मुखिया पुरूष इसका दोष स्त्रियों को देने लगते हैं। सुषमा की सगाई पुरूष वर्ग द्वारा बिना उचित–अनुचित उपयुक्त–अनुपयुक्त का विचार किये जयदेव के मौसा जी करने जा रहे थे और जिसे जयदेव ने रूकवा दिया था तो इसका सारा दोष मौसी पर मढ़ते हुये मौसा जी कहते हैं "कि यह सब तेरा किया हुआ है तूने उसे सिर पर चढ़ा रखा था। जब बाहर से आओ यहां बैठा होता सारे शहर में मेरी नाक कटवा दी इस लौड़े ने घर में कदम क्या रखा प्रलय आ गई। यह सब तेरा ही किया हुआ है। यह सुनकर मौसी का दिल रो उठा।"[3]

भारतीय समाज में एक बहुत ही दोष पूर्ण परम्परा चलती है कि लड़की के लिए उपयुक्त वर की योग्यता रूचियों पता न लगाकर लड़के वालो की आर्थिक स्थिति देखकर ही बुजुर्ग पीढी के लोग उसकी खुशहाल जिन्दगी का अनुमान लगाकर अथवा अन्य दबाव में आकर अपनी बेटी से विवाह का वचन दे बैठते हैं और दी हुई जबान का निर्वाह करने के लिए लड़की के भविष्य को दांव पर लगा दिया जाता है ।

भारतीय समाज में यह भी एक प्रथा चली आ रही है कि यदि लड़की के भविष्य के साथ बुजुर्ग पीड़ी के लोग खिलवाड़ करते हैं तो उसकी रक्षा भी बुजुर्ग महिलायें भी मानसिक दासता के कारण करने लगती हैं । उन्हें यह मानसिक घुट्टी शुरू से ही पिलायी जाती है । जयदेव की माँ बार–बार आंसू पोछकर कहती है चलो छोड़ो जो हो गया सा हो गया अगर लड़की के भाग्य में सुख लिखा है तो भगवान उस पर दया करेंगे । अब जो अनर्थ हो गया अब पानी पिलाने से क्या फायदा।

"कुन्तों उपन्यास में पुरूष प्रधान सभ्यता के इस भ्रामक जीवन मूल्य को उजागर किया गया है कि शादी की तुलना में लड़की की शिक्षा–दीक्षा को कोई मूल्य नहीं। कुन्तों का इम्तहान है जो अधिक महत्वपूर्ण है किन्तु घर

के बड़े बुजुर्ग एवं सलाहकार मंडल बैठकर उसकी शादी के बारे में चर्चा कर रहे हैं। जब यह पता चलता है कि कुन्तों के इम्तहान का क्या होगा ? उसे दसवीं के इम्तहान देना है तो इस घर के लोग एवं बड़ी बहन फर्माती हैं कि इम्तहान बाद में देती रहेगी न भी दिया तो कौन सी उसे नौकरी करनी है ।

भीष्म जी ने इस उपन्यास में भारतीय समाज में स्त्रियों के पहनने, ओढ़ने, शिक्षित होने, संगीत नाटक की गतिविधियों भाग लेने पर लगी पाबंदियों का चरम दर्शाने के लिये उस स्थिति का वर्णन भी किया है । यदि लड़की अपने मंगेतर के साथ भी घूमने जाती है तो समाज के ठेकेदार लोग निंदा रस लेने से नहीं चूकते। जयदेव कुन्तों को वानप्रस्थी के खतरनाक रूख के बारे में बतलाते हुये कहता है । " यह वानप्रस्थी जी हैं । वानप्रस्थियों से डरकर रहा कर तूने कभी कोई वानप्रस्थी देखा है उसके हाथ में डंडा होता है, घुटा हुआ तेल से चुपड़ा जबड़ा, वे सुबह केवल दूध पीते हैं और शाम को चबैना खाते हैं उन्हे मर्द औरत साथ–साथ चलते नजर आ जाये तो उनकी आंखे लाल हो जाती हैं, मूँछे फुरकने लगती हैं और डण्डे पर हाथ मचलने लगता है मैं और तुम बाल–बाल बच गये । " [4] जयदेव के पिता भी जयदेव को मंगेतर के साथ घूमने जाने पर जयदेव को डांटते हुये कहते हैं कि शर्म हया बेच खायी है क्या ?

भारत के मध्यमवर्गीय परिवारों में यह प्रकृति पायी जाती है कि वे अपनी अनपढ़ या अर्द्धशिक्षित लड़की का विवाह ऐसे लड़के के साथ कर देते हैं जिसकी पढ़ाई अधूरी रहती है और वह किसी काम धंधे से लगकर अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाता है किन्तु इसके खतरनाक परिणाम अनेक रूपों में विवाह के अनेक वर्षों तक सामने आते रहते हैं । कुन्तों उपन्यास में प्रोफेसर की बड़ा भाभी एवं छोटे भाई की पत्नी थुलथुल के साथ ऐसी दुखदायी स्थितियां पैदा होती हैं ।

अनेक परिवार ऐसे होते हैं जिनमे पुरूष आनी पत्नियों पर अत्याचार ढोते हैं । यदि उनके जुल्म ज्यादतियों का पता समाज को हो या कानूनी कार्यवाही की जाये तो वह जुल्म ज्यादती बंद हो सकती है किन्तु परिवार के लोग बजाये पीड़ित की मदद करने के जुल्म ज्यादतियों की अभिव्यक्ति को अधिक बड़ा अपराध मानते हैं । उनकी मान्यता है कि जुल्मों के बारे दुनियाँ को बताने पर उनकी परिवार की मान प्रतिष्ठा समाप्त हो जायेगी दस दुश्प्रवत्ति से स्त्रियों पर होने वाले अत्याचार एवं अत्याचार करने वालों की मनमानी बढ़ती चली जाती है । जब धनराज के क्रूरतापूर्ण व्यवहार करने पर उसकी पत्नी थुलथुल रोने लगती है । सिर फोड़ने लगती है तो इसे प्रोफेसर तक उसी का कसूर मानने लगते हैं । प्रोफेसर साहब भी रो धोकर सिर पीटकर अपने दुख को प्रगट करने वाली थुलथुल का मुँह बन्द करने हेतु अपनी भाभी की प्रशंसा करते हुये कहते हैं । " बड़ी भाभी भी तो दुख उठा रही हैं वह घर में बोलती तक नहीं पर इससे उसका दुख तो कम नहीं हो गया" । [5]

अधिकांश स्त्रियाँ अपने पति के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को पोषित करती हैं और यह भी अपेक्षा रखती हैं कि उनका पति भी उन्हें एक निष्ठ प्रेम प्रदान करे–प्रणय के स्तर पर उसे अपने एकाधिकार प्रदान करें।इस भावना पर जब किसी कारण आघात होता है तो नारी इस सदमें को नहीं झेल पाती। वह भीतर ही भीतर इस कदर घुटती है कि इसकी जीवनी शक्ति, जीवन के प्रति इसकी चाह जाती रहती है और दुखमय स्थिति झेलते–झेलते वह मौत की ओर कदम बढाती है। कुन्तो का जीवन तब तक सुखमय रहा जबतक सुषमा के प्रति जयदेव का प्रेम सात्विक नजर आता था।किन्तु जैसे ही ऐसी घटनाएं घटित हुईं कि जिनके कारण कुन्तों को लगा कि सुषमा जयदेव की प्रेयसी है वह दुखी होकर छलनी–छलनी हो जाती है।

अनेक परिवारों में जीविका उपार्जन हेतु पत्नी से दूर रहते हुये अर्थोपार्जन करते हैं।उनका तर्क रहता है कि इससे धन की बचत होती है और बच्चो का भविष्य ठीक रहता है ।किन्तु वास्तविकता यह है कि पत्नी का जीवन पति के इंतजार की घड़ियां गिनते दुखमय दशा में चला जाता है। बच्चे भी पिता के वात्यल्य के लिए तरस जाते हैं। कुन्तों उपन्यास में जयदेव की दीदी विद्या के दुखमय जीवन की झांकी के माध्यम से नारी की इस दुखमय परिस्थिति को दर्शाया गया है।विद्या के पति कम्पनी एजेंट के रूप में टूर ही करते रहते हैं और स्त्री उनके लिए वासना तृप्ति का यंत्र रह जाती है। वे बिना क्षमताओं का ध्यान रखते हुये चार बच्चों के पिता बन जाते हैं और ठीक से उनकी परवरिश पर ध्यान नहीं दे पाते हैं और न ही पत्नी की सुख–सुविधाओं का उन्हें ख्याल रहता है । 5वीं संतान गर्भ में आने पर विद्या जग हंसाई डर से गर्भपात का नीम हकीमी तरीका स्टूल से कूदने का अपनाती है जिससे गर्भाशय घायल होकर उसे मृत्यु तक पहुँचाने वाली बीमारी दे जाता है ।

कुन्तों उपन्यास में लेखक ने थुलथुल की मृत्यु पर शोक मनाने की औपचारिक बैठकों में ऐसी संवेदनहीन स्त्रियों का चित्र भी प्रस्तुत किया है जिसमें हम देखते हैं जुल्म ज्यादाती झेलती थुलथुल के प्रति सच्ची संवेदना, उसकी मृत्यु के कारणों पर चर्चा के बजाये उल्टे जुल्म करने वाले पुरूष के प्रति सहानुभूति के भाव एक बुजुर्ग स्त्री करने लगती है । वह कुन्तों से फुसफुसाते हुये कहती है " बुरा हुआ तुम्हारे भैया के साथ जुल्म हुआ अभी इसकी उम्र ही क्या है अकेला मर्द पागल हो जाता है बेटी । मर्द अकेला नहीं रह सकता औरत भले ही रहले।"[6]

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि चर्चा करनेवाली स्त्री मर्द जाति की महिमा गाने और स्त्री को कूड़ा करकट समझने की दिमागी दासतापूर्ण धारणा से त्रस्त है ।

लेखक भीष्म साहनी ने समाज स्त्रियों पर बढ़ते हुये जुल्म की सजा के इस कारण भी प्रकाश डाला गया है कि लोग अपने परिवार के सदस्य द्वारा स्त्रियों पर किये जुल्म की सजा दिलाने के बजाये परिवार की प्रतिष्ठा बचाने को अधिक प्राथमिकता देते हैं । प्रोफेसर के परिवार में अत्यंत जघन्य अत्याचार का हादसा हुआ उनके छोटे भाई धनराज ने अपनी पत्नी को मारपीट कर, अपमानित तिरस्कृत कर आत्महत्या को बाध्य किया किन्तु न्यायप्रिय बुद्धिजीवी होकर भी सभी भाई मिलकर इस आत्महत्या को

दुर्घटना बताते हैं और जालिम भाई की शादी कोकिला के साथ कर देते हैं ।

कुन्तों उपन्यास में सहदेव की सगाई करने पेशावार वाले अपने अपनी लड़की को लड़के वालों के यहाँ पसंद करवाने के लिये इस प्रकार लाते हैं । जैसे कोई घटियामाल का सौदागर अपना माल ठिकाने लगाने के लिये तिकड़मों का सहारा लेता है । पेशावर वालों ने कई वर्ष पहले जब बात चलाई थी तो सहदेव के पिता ने बिना घरवालों से पूछे वचन दे दिया था । जब बाद में सहदेव से पूंछा तो नापंसद होने पर भी वह पिता के डर से साफ–साफ कुछ न कहकर केवल इतना कहकर चुप हो गया कि अभी शादी नहीं करूंगा उसने समझा बात टल गयी लेकिन जब वह सगाई पक्की करने लडकी को साथ लेकर आ गये उन्होने लड़की की सगाई के लिये यह स्कीम बनाई कि लड़का जैसे ही श्रीनगर अपनी बहिन के यहाँ पंहुचे दो तीन दिन लड़की को लेकर उनके साथ रहे।

लेखक ने इस उपन्यास में साम्प्रदायिक दंगे की झलक प्रस्तुत करके स्त्री हत्या की इस हृदय विदारक परम्परा की ओर संकेत दिया है । जिसमें धर्मांध लोग क्रूर होकर अपने ही परिवार की हत्या कर देते हैं अथवा उन्हे आत्महत्या की ओर प्रेरित करते हैं । कुन्तो उपन्यास में यह चित्रित किया गया है कि एक साम्प्रादयिक बलवे के दौरान आत्मरक्षा के लिये कुछ सरदार अपने परिवार वालों के साथ घर छोड़कर जंगल में छुपने चले गये मर्द–औरतें बच्चें भी सभी । जंगल में दूर बलवाईयों के ढोल बजने की आवाज और नारे गूंज रहे थे उन्हे आभास हुआ कि बलवाई बरछे लिये आ रहे हैं उन सरदारों के पास आत्मरक्षा के लिये केवल दो–चार तलवारें ही थीं । ढोल बजाता गिरोह पेड़ों के झुरमुट में काफी दूर था।

किन्तुं उन्हें लगा कि गिरोह में उन्हें छुपा देख लिया और वे नजदीक आ रहे हैं उन्होने सोचा कि बलवाई औरतों और लड़कियों की इज्जत लूंटेगे इस डर से उन्होने वाहे गुरू का नाम लेकर खुद ही उनका कत्ल कर दिया बाद में विदित हुआ कि बलवाई उनकी ओर न आकर सीधे चले गये । लेखक ने संकेतों के द्वारा व्यंजित किया कि धर्मांध लोग इस धारणा में जीते हैं कि स्त्रियाँ दूसरे के हवाले हो जाने पर जिस प्रतिष्ठा की हानि होती है वह प्राणों से भी अधिक कीमती है। इसी धारणा के कारण ही तो इतिहास में जौहर के नाम पर आत्महत्यायें हुईं हैं । इसी धारणा के कारण कितने ही अपनों नें अपने घर की स्त्रियां को स्वयं ही मार डाला ताकि वे दुश्मनों के हाथ न आने पायें ।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि कुन्तों उपन्यास में भीष्म साहनी की संवेदनशील पैनी नजर नारी समस्यओं के सूक्ष्म अवलोकन में एकाग्रता से प्रवत्त हुई है । समस्याओं की कार्यकारण श्रंखला का विश्लेषण करते समय वे सामाजिक यथार्थ के चिंतन से सम्पन्न दिखाई देते हैं ।

उद्देदश्य

इस शोध आलेख के द्वारा यह सदेंश व्यंजित किया है कि सफल दांपत्य जीवन के लिये युवक–युवतियों का जीवन तभी सफल व सुरक्षित हो सकेगा जब वे बेरोजगारी के शिकार न हो लड़के–लड़कियों की आत्मनिर्भरता ही वह उपाय है जिससे प्रेम विवाह सफल होंगे और जिससे वे समाज में सम्मानित जीवन निर्वाह कर सकेंगे ।

निष्कर्ष

स्त्रियों को गुलाम बनाने वाले कारणों का अनुसंधान और उन परिस्थितियों को दूर हटाने के उपायों के संदर्भ में जब हम भीष्म जी के उपन्यास कुन्तों पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि उनका सर्वाधिक ध्यान कारणों के अनुसंधान पर गया है क्योंकि उपाय प्रत्यक्ष रूप से लेखक बताय या न भी बताये कारणों की जानकारी होने पर सहृदय पाठक स्वयं ही उनसे प्रेरित होकर समाधान ढूंढ़ लेता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भीष्म साहनी : कुन्तो, पृष्ठ 23*
2. *भीष्म साहनी : कुन्तो, पृष्ठ 22*
3. *भीष्म साहनीः कुन्तो, पृष्ठ 78*
4. *भीष्मसाहनी : कुन्तो, पृष्ठ 99*
5. *भीष्म साहनी : कुन्तो, पृष्ठ 101*
6. *भीष्म साहनीः कुन्तो, पृष्ठ 232*